अल्लाहुम्मा लब्बैक | By Yusuf Azad Qauwwal |

तेरी मदद और मैं मज़बूर सर पे का उसूल
मैं कहाँ से लाऊँ इतना हौसला इतना शूल
सिर्फ तेरे आसरे पर लब्ज़ चाहता हूँ मैं
इस शहादत की मुझे तौफ़ीक़ दे रब्बे रसूल

लब्बैक लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक
लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक
सिम्नल हम्दा वलयमकलका
वलमुन कुला शरीका लका हूऽऽ
अल्लाह हूऽऽ हूऽऽ अल्लाह हूऽऽ
अल्लाहुम्मा लब्बैक

शुरू करता हूँ तेरे नाम से
हर काम में अल्लाह
बड़ा ही बरकतों वाला है
तेरा नाम ऐ अल्लाह
तू रब्बुल आलमीन है
हम तेरी तारीफ़ करते हैं
मलायेक किन्नू इंसान
सब तेरी तारीफ़ करते हैं
हमारा तू है आका
और सारी गोपियाँ तेरी
ज़मीं से आसमानों तक
सजी है कुर्सियाँ तेरी
बहुत ही मेहरबान है तू
बड़ा ही रहनुमाया है
ऐ सबके पालने वाले
तेरा ही बोलबाला है
नहीं है दूसरा माबूद
ऐ अल्लाह सिवा तेरे
तुझी से माँगते हैं हम
कि बंदे हैं ख़ुदा तेरे
तेरे ही हुक्म से
हम आज तेरे दर पे आए हैं
जिधर से भी गुज़रते हैं
यही इकरार करते हैं

अल्लाहुम्मा लब्बैक
अल्लाहुम्मा लब्बैक
लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक
सिम्नल हम्दा वलयमकलका
वलमुन कुला शरीका लका हूऽऽ
अल्लाह हूऽऽ हूऽऽ अल्लाह हूऽऽ
अल्लाहुम्मा लब्बैक

तेरी तारीफ़ की ताक़त
कहाँ है मुझमें इंसान में

तेरी तारीफ़ के
अल्फ़ाज़ मिल जाते हैं दुआ में
इन्हीं को पेश कर देता हूँ
मैं तेरी सदाओं में
इन्हीं अल्फ़ाज़ को दोहराता
रहता हूँ दुआओं में
चला उस पर ही मुझको
जो सीधा रास्ता या रब
जिसे तुमने नवाज़ा है
उन्हीं का रास्ता ऐ रब
तेरे महबूब ने जिस राह
पर चलकर दिखाया है
मेहरबानी से जिनकी
आँख ये लम्हा भी आया है
कभी खुद को कभी
काबे हरम को देख लेता हूँ
मेरे मौला तेरी
शाने करम को देख लेता हूँ
दायरे पाक में अपनी ज़ुबान
जब खोलता हूँ मैं
शाले कीब भी आई
सर झुकाकर बोलता हूँ मैं

अल्लाहुम्मा लब्बैक
अल्लाहुम्मा लब्बैक
लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक
सिम्नल हम्दा वलयमकलका
वलमुन कुला शरीका लका हूऽऽ
अल्लाह हूऽऽ हूऽऽ अल्लाह हूऽऽ
अल्लाहुम्मा लब्बैक

निगाहों में किसी के
गुंबदे ख़िज़रा का मंज़र है
किसी के हाथ में पैमाने
ज़मज़म मुनव्वर है
तसव्वुर में किसी के दामने
महबूबे ज़ावर है
किसी के ख़्वाब में बस रौज़ए
अक्सा का मंज़र है
नबी वाले नबी के
ख़्वाबगाहों की ज़ियारत है
नबी अब आले आका की
मकानों की ज़ियारत है
हेरा के तार का वल्लाहो
अकबर का नज़ारा है
यहाँ पहला सबक
महबूब के सीने में उतारा है
यहाँ जिब्रील ने फैला दिए हैं
नूर के शैबर
यहाँ क़ुर्बान होते हैं

मुहम्मद पर माहोअख़्तर
सफ़ा मरवा से ज़ाहिर है
तलाशे आपका मंज़र
यहाँ ईमाने इब्राहीम
तशह्हुद है हर पत्थर
वो इब्राहीम जो जिसने दावते-
हज को मुकम्मल की थी
यही आवाज़ हर छोटे बड़े
के दिल से निकली थी

अल्लाहुम्मा लब्बैक
अल्लाहुम्मा लब्बैक
लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक
सिम्नल हम्दा वलयमकलका
वलमुन कुला शरीका लका हूऽऽ
अल्लाह हूऽऽ हूऽऽ अल्लाह हूऽऽ
अल्लाहुम्मा लब्बैक

मदीने का सफ़र भी
रूह को चमकाने वाला है
यहाँ सब रहमतें दुनिया में
लेकर आने वाला है
मुहम्मद मुस्तफ़ा वो हैं
अभी बे-किब्रिया वो हैं
शहनशाहे वो आलम सफ़ाए
रोज़े जैसा वो हैं
वही ख़ैरुल बशर ख़ैरुल
उमम ख़ैरुल वरा वो हैं
जमाले इब्तिदा वो हैं
कमाले इंतिहाँ वो हैं
नमाज़ें लेकर आए हैं
वो क़ुरआन लेकर आए हैं
वो उम्मत के लिए
बख़्शिश का सामान
लेकर आए हैं
उन्हें तौफ़ीक़ देता है
खुदा वो हज को जाते हैं
करम से उनके खाली झोलियाँ
भर-भर के लाते हैं
मेरी तक़दीर तो सोई हुई है
क्या करूँ राही
मेरी भी आरज़ू है
मैं वहाँ जाकर कहूँ राही

अल्लाहुम्मा लब्बैक
अल्लाहुम्मा लब्बैक
लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक
सिम्नल हम्दा वलयमकलका
वलमुन कुला शरीका लका हूऽऽ
अल्लाह हूऽऽ हूऽऽ अल्लाह हूऽऽ

अल्लाहुम्मा लब्बैक

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%85%e0%a4%b2%e0%a5%8d%e0%a4%b2%e0%a4%be%e0%a4%b9%e0%a5%81%e0%a4%ae%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a4%be-%e0%a4%b2%e0%a4%ac%e0%a5%8d%e0%a4%ac%e0%a5%88%e0%a4%95-by-yusuf-azad-qauwwal/